

बदलने की आवश्यकता है

कोई भी पुरुषार्थी सोच सकता है कि जो भी ऊँची-ऊँची बातें हैं, उसकी पहुंच से बाहर हैं और अभी तो वो उससे काफी दूर है। कोई तो ये भी कहेंगे कि ये आदर्श है, ये व्यवहारिक नहीं है, वे ऐसी गगनचुंबी अवस्था में अथवा स्थिति के शिखर पर कैसे पहुंचेंगे। उनका मन जो बार-बार मैला हो जाता है, उस धूल-मिट्टी अथवा कचरे-कीचड़ में कैसे बचा रहे? वे कहेंगे कि उनकी दृष्टि पर तो दूसरों के अवगुणों का चश्मा चढ़ा ही रहता है या उनके दुर्गुण उनकी आँख में धूल के कंकड़ की तरह चुभते ही रहते हैं। आखिर उन्हें आँखें तो खुली रखनी हैं, तब उनकी दृष्टि कैसे निर्मल बनी रहे? ये प्रश्न हरेक के लिए उपयोगी है।

इनके पीछे दृष्टि और वृत्ति को बदलने की चेष्टा है, यह चेष्टा संकेत देती है कि उनकी पुरुषार्थ करने की नीयत तो है। ऐसे लोग उन लाखों-करोड़ों से अच्छे हैं जो अपनी वृत्ति-दृष्टि को बदलने की कामना ही नहीं करते। अपनी हालत खराब कर बैठने के बावजूद भी वे इस खराबी के स्वाभाविक होने की बात करते हैं और तर्क-वितर्क से युक्ति-संगत बताते हैं। ऐसे लोगों का बदलना तब तक असंभव है जब तक उन्हें यह एहसास ही नहीं होता कि हमें स्वयं को बदलना चाहिए। बदलना आवश्यक है, बदलने के बिना हमारी गति ही नहीं है। आज बदलें या कल, बदलने के बिना कोई दूसरा रास्ता ही नहीं है। मन की गहराई से यदि हम बदलना स्वीकार नहीं करेंगे तो परिस्थितियां हमें बदलने पर मजबूर कर देंगी। तब यदि हम न बदले तो फिर हम स्वयं को मनुष्य की कोटि में न समझें।



डॉ. गंगाधर

कुत्ता एक ऐसा पशु है जिसकी पूंछ सदा टेढ़ी बनी रहती है। कहते हैं कि एक मनुष्य ने वर्ष भर कुत्ते की पूंछ को लोहे की नली में सीधा कसकर रखा, उसने सोचा एक वर्ष काफी होता है, अब तो यह पूंछ सीधी हो ही गई होगी। इस दौरान कुत्ता चिल्लाता भी था तो भी उसने उसकी पूंछ पर से नली नहीं हटाई। पर वर्ष बाद जब हटाई तब तो यह देखकर आश्चर्यचकित हुआ कि कुत्ते की पूंछ तो वैसी ही टेढ़ी है! ऐसे ही कुछ लोग बदलना ही नहीं चाहते। उनके बारे में तो कहेंगे कि 'अल्लाह ही खैर करे!' 'खुदा हाफिज उन्हें खौफ-ए-खुदा ही नहीं है।' जो धर्मराज से ही नहीं डरते, वे धर्मात्मा लोगों से कहाँ डरेंगे!

जो बदलना चाहे उनके लिए कल्याणकारी प्रभु ने अनेक विधियां, युक्तियां अथवा उपाय बताये हैं जिनसे उनकी आत्मा में घुसे हुए संस्कार बाहर निकल जाएं और उनका पीछा छोड़ दें। उन सबका तो यहां उल्लेख करना संभव नहीं है, परंतु एक ऐसी बात को यहां हम लिपिबद्ध करना चाहेंगे जो कि किसी अंश में हमारी दृष्टि, वृत्ति और कर्म को विकृत होने से बचा सकती है। वो ये है कि कई बार हम किसी व्यक्ति से किसी दूसरे की निंदा-चुगली सुनकर, शिकायत सुनकर, अफवाहें सुनकर उसे तुरंत मान जाते हैं और यह सोचने लगते हैं, 'अच्छा, वो व्यक्ति ऐसा निकृष्ट है! हमने तो उसके विषय में कभी ऐसा सोचा ही नहीं था।' हम इस बात की जांच नहीं करते बल्कि यह देखकर कि कहने वाला व्यक्ति हमारा घनिष्ठ मित्र है, विश्वास-पात्र है, हमारे निकटतम हैं, हम उस बात को दूसरे व्यक्ति की अनुपस्थिति में मान जाते हैं। गोया हम उसकी पीठ में छुरी घोंपते हैं। चाहे व्यक्ति निर्दोष ही हो, हम दूसरे के कहने में आकर मन ही मन उससे घृणा करने लगते हैं। जिसे हम अच्छा समझते थे, उसे अब घटिया मानने लगते हैं और कई बार तो दूसरों को कहने भी लगते हैं कि 'अरे, तुम्हें मालूम है कि उस व्यक्ति का तो फलाना से लगाव-झुकाव है। वो झूठा है, ठग है, बेईमान है, वो केवल बाहर का दिखावा दिखाता है और वाचाल है। बाकी उसमें ज्ञान-ध्यान कुछ नहीं है। तुम आगे के लिए उससे बोलना छोड़ दो, उसका संग खराब है। मनुष्य कर्म के साथ भारी पत्थर बांधकर पानी में उतरगा तो डूबेगा ही। उसके संग वाले का भी ऐसा ही परिणाम होगा। सुना, तुम बचकर रहना।' जब ऐसी दृष्टि हो जाये तो मनुष्य की अपनी बुद्धि मारी जाती है क्योंकि वो स्वयं अपनी बुद्धि में कंकड़-पत्थर इकट्ठे करने लगता है, गोया अपने ही डूबने की तैयारी करने लगता है। अपने को जिंदा जलाने के लिए चिता की लकड़ियां स्वयं चुनकर लाता है और उनकी सेज बनाता है। अपनी हत्या के लिए अग्नि स्वयं अपने हाथों से लगाता है, उसे किसी करनीघोर ब्राह्मण की आवश्यकता ही नहीं। इस तरह अगर हमने अपने पर ध्यान नहीं दिया तो हमारी स्मृति भ्रंस हो जायेगी और जिसकी स्मृति ही भ्रंस हो जाये, तो गीता के महावाक्य हैं, 'उनकी केवल लुटिया ही नहीं डूबती, उनका तो सर्वनाश हो जाता है।

मन की मौजों को त्याग अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलो

अपनी स्थिति अडोल हो, व्यवहार कुशल हो। आपस में बहुत स्वीट व्यवहार रखो लेकिन किसी की स्वीटनेस से प्रभावित न हो जाओ। यहाँ पर सेप्टी चाहिए। यह बड़ा स्वीट है, नहीं। ऐसे नहीं यह स्वीट है तो आप मक्खी बन जाओ। मधु भले बने पर मक्खी नहीं बने। अपने को भी स्वीट बनाओ। बाबा ने कोई हठयोग नहीं दिया है कि आपस में नहीं हँसो, हँसो, बहलो, खुशी में नाचो परंतु पर्सनल किसी के साथ हँसना, बहलना यह रॉंग है। मुझे पर्सनल सर्विस चाहिए, सेंटर चाहिए, साथी चाहिए... यह रॉंग है। परिवार से इंडिपेंडेंट नहीं रहो। हम सब एक-दूसरे पर डिपेंड हैं। कोई-कोई कहते हैं हम तो मॉडर्न हैं। हम मॉडर्न रहना चाहते हैं लेकिन ब्र.कु. माना बैकुण्ठ के वासी। वह मॉडर्न नहीं रह सकते। मॉडर्न तो रावण के हैं। बाबा ने हमें सफेद ड्रेस पहनना सीखा दिया, प्युरिटी में रहना सीखा दिया। प्युरिटी में रहना ही हमारे लिए मॉडर्न रहना है। बाबा ने पुरानी दुनिया के मॉडर्न से निकाल दिया। हम तो स्वर्ग के मॉडर्न उसके मॉडल बन रहे हैं। किसी भी प्रकार का शौक है- चाहे पार्टियों में जाने का, चाहे दूर-दूर जाकर पिकनिक आदि करने का... यह सब शौक योग

की स्थिति से नीचे ले आयेगे। यह योग की स्थिति में बाधक हैं। जितनी मर्यादा रखो उतना अच्छा है। आज माया नहीं है, कल किसी भी घड़ी माया आ सकती है। इसलिए एक-दूसरे से प्राइवेट पत्र व्यवहार न रखो। प्राइवेट लेन-देन न करो। यह सब धारणाएँ बनाओ। नियम-संयम ही जीवन का आदर्श है। जितना प्यारे बने उतना हम सबका टाइमल है ब्र.कु.राजयोगी। जब कभी थोड़ा संस्कारों का टक्कर होता-तो उसके दो कारण होते-एक तो अपने को सदा राइट समझते, और दूसरे को रॉंग समझ लेते। जब ऐसी भावना दिल में पैदा होती है तब टक्कर होती है। जैसे बाबा ने गुरु गद्दी नहीं दिया, ऐसे किसी को बॉस नहीं बनाया। कोई बड़ा कोई छोटा नहीं। व्यवहार में

कमी होती है तब एक-दूसरे का संस्कार आपस में टकराता है। इसके लिए बहुत सहज विधि बाबा ने सुनाई है "पहले आप" का पाठ पक्का रखो। यह एक ऐसी विधि है जिससे सब अपने बन जाते हैं। पहले मैं- यह दूर करता, पहले आप- यह पास ले आता। दूसरा जैसे बाबा जो कहे हों जी करते, ऐसे एक-दूसरे को भी हों जी करो। ना कभी नहीं करो। ओ.के. कहते चलो तो सब मन ओ.के. हो जायेगा। हरेक का उत्साह बढ़ाओ। उत्साह दूसरे के मन को प्रफुल्लित करता है। इसके लिए अपना सब कुछ त्याग चाहिए। बाबा ने हमें अष्ट शक्तियाँ दी हैं, उसमें सहनशीलता की शक्ति भी विशेष है। कोई भी बड़ा बना है तो उसने दुनिया की अनेक बातों को सहन किया है। तो हम भी जब एक-दूसरे की छोटी-छोटी बातों को सहन करेंगे तब प्यारे बनेंगे।

एक बात की सबसे रिक्वेस्ट करती हूँ- ईश्वरीय मर्यादाएँ हम सबका धर्म है, इन्हें कभी भी लूज नहीं करो। माया को कहीं से भी घुसने न दो। हम मन मौजी नहीं हैं, बाबा के मौजी हैं। इसलिए मन की मौजों को त्याग दो। और बाबा के अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलो।



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

बाबा ने हमें सफेद ड्रेस पहनना सीखा दिया, प्युरिटी में रहना सीखा दिया। प्युरिटी में रहना ही हमारे लिए मॉडर्न रहना है। बाबा ने पुरानी दुनिया के मॉडर्न से निकाल दिया। हम तो स्वर्ग के मॉडर्न उसके मॉडल बन रहे हैं।

न्यारे बने। जितना नियमों का पालन करेंगे उतना स्वधर्म की स्थिति में अच्छे रहेंगे।

हम सबका एक ही लक्ष्य है, हम एक परिवार के हैं। प्रेम के व्यवहार को जानते हैं, यहाँ न कोई गुरु की गद्दी है, न कोई शिष्य है। किसी भी स्थान पर किसी का नाम नहीं है। न प्रॉपर्टी का झगड़ा है, न कुर्सी का झगड़ा है।

सिर्फ निमित्त मात्र रहते। जब स्व का भाव छोड़ देते, मधुर बोल नहीं बोलते, थोड़ा कडुवा बोल निकलता तब टक्कर शुरू होती है। क्योंकि कटुवचन दूसरे को कटे की तरह पिंच होता है। इसके लिए स्व के भाव में रहो, स्व के अभिमान में नहीं आओ। दूरदेशी बने लेकिन दिमाग का नशा नहीं रखो, स्वार्थी नहीं बने। जब इन्हीं बातों की

सिर्फ निमित्त मात्र रहते। जब स्व का भाव छोड़ देते, मधुर बोल नहीं बोलते, थोड़ा कडुवा बोल निकलता तब टक्कर शुरू होती है। क्योंकि कटुवचन दूसरे को कटे की तरह पिंच होता है। इसके लिए स्व के भाव में रहो, स्व के अभिमान में नहीं आओ। दूरदेशी बने लेकिन दिमाग का नशा नहीं रखो, स्वार्थी नहीं बने। जब इन्हीं बातों की



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

कोई भी बात मुश्किल तब लगती है जब माया वार करती है। हम सबका यह लास्ट जन्म है। तो लास्ट जन्म में सारा ही 63 जन्म का हिसाब-किताब चूक होना है फिर चाहे योगबल से करो, चाहे बीमारी द्वारा करो, चाहे सहनशक्ति द्वारा करो। तब ही बाबा के साथ घर जा सकेंगे और साथ में फर्स्ट जन्म में भी आ सकेंगे।

समस्या को परिवर्तन करके समाधान स्वरूप बनने के लिए स्वयं में शक्ति भरनी है। अपने को शिवशक्ति समझेंगे तो कभी भी नरम स्वभाव, रोना, रूसना... इस प्रकार की कोमलता नहीं होगी। तो अपने को छोटी व कुमारी या पुरुषार्थी नहीं समझना। कुमारी है तो कोमलता है। अभी तो बाबा का स्थान मिल गया, बाबा की गुरु भाई बन गईं, तो अभी कर्मों की गति को ध्यान में रखते हुए बहुतकाल से तीव्र पुरुषार्थ की स्थिति होनी चाहिए। बहुतकाल के पुरुषार्थ के विजयी क्योंकि हम जो भी कुछ करते हैं, उसका हिसाब तो बन ही जाता है। गलती की तो दण्ड का भी हिसाब है।

ज्ञान के प्वाइंट केवल रिपीट नहीं करो, लेकिन शुद्ध संकल्पधारी समर्थों का स्वरूप प्रत्यक्ष दिखाई दे। ज्ञान का मनन करके उसी में मगन हो जाओ अर्थात् भिन्न-भिन्न ज्ञान के प्वाइंट में मन स्थिर हो जाये। मनन करना अलग है, रिपीट करना अलग है, वो भी अच्छा है। अलग-अलग टाइम पर अलग-अलग टॉपिक के प्वाइंट पर मनन

शुद्ध संकल्पधारी समर्थों का स्वरूप प्रत्यक्ष दिखाई दे

करते मगन हो जाओ। जैसे योग की सब्जेक्ट में मनन करते-करते उस रूप में चले जाओ तो सारा व्यर्थ खत्म होता जायेगा।

कुछ भी करो लेकिन व्यर्थ संकल्पों को स्टॉप करो क्योंकि यही योग में बहुत डिस्टर्ब करते हैं। बाबा कहता है जो मैं जिस दिन कहता हूँ, उस ताजे माल में ताकत होती है, उसी दिन आप प्रैक्टिकल करो तो आपको हिम्मत भी मिलेगी, बाबा की मदद भी मिलेगी। बासी खाना खाने से तो बीमारी ही आयेगी।

माया भिन्न-भिन्न रूप में व्यर्थ लाती है, उस पर किस शक्ति से हम विजय पा सकते हैं, वो दोनों बातें अच्छी तरह से जानते तो हैं, परन्तु होता क्या है? उस समय वो याद ही नहीं आता है, समय पर शक्ति यूज करने नहीं आती है, इसके कारण बार-बार समस्याएँ व व्यर्थ संकल्प आते रहते हैं।

मानों मेरे सामने ऐसे पेपर आये या फलाने ने मेरे साथ यह किया, उस समय देखो क्या करना है? तो शक्तियों को यूज करो, उसका वर्णन करते रहो। आज समाने का पेपर दूँगी, तो उस समय क्या करूँगी... ऐसे यह मनन करते रहो और यूज करते रहो। यूज नहीं किया तो रिवाइज करो। यह करने से क्या फायदा होता है, यह न करने से क्या नुकसान होता है, ऐसे मनन करो। तो मनन करने से वो शक्ति आपके पास हमेशा हाज़िर रहेगी।

योगी बन करके खुद ही खुद को सहयोग दो



राजयोगिनी दादी जानकी जी

बाबा एक ही टाइम तीन काम करता है, एक तो विकर्म विनाश भी करता है, दूसरा माफ भी करता है फिर श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति बहुत देता है, इन तीनों बातों को सहयोग दो। योग से सहयोग मिलता है। योग से अन्दर बाबा का सहयोग बहुत है। बाबा ने इतना रॉयल बनाया है इसलिए कभी किसी से सहयोग लेना नहीं पड़ा है, जब जो ज़रूरत हो वो आपेही बाबा किसी न किसी के श्रु सहयोग देता है।

एक बारी बाबा ने टेस्ट लिया, कराची में बहुत अच्छा 56 प्रकार का भोजन बनवाया, सभी खाने के लिए बैठे थे, बाबा सबको देख रहा था, इतना अच्छा भोजन बना था सबने अच्छी तरह से खाया। रात को क्लास में पूछा कौन-सी चीज अच्छी थी? तो किसी ने कहा बाबा यह अच्छा था, तो बाबा ने कहा फेल। दूसरे दिन डायरेक्शन दिया अभी सिर्फ बात है शरीर को कुछ होता है, सकाश चला रही है। सूक्ष्म ईश्वर स्वयं मेरे ऊपर राजी हो करके सकाश की शक्ति दे रहा है। राजी नहीं होगा तो सकाश नहीं देगा, कहेगा तुम्हारे कर्म तुम जानो क्योंकि पुरुषार्थ में अटेन्शन नहीं है, बाबा को राजी नहीं कर सकेंगे। ब्राह्मणों को सबसे बड़ा दुःख है अपमान का। इच्छा है मान की,

अब इनसे परे अभोक्ता बने, स्वमान में रहो। मेरा कोई अपमान करे तो सोचो मेरी टेस्ट लेता है, ऐसे अन्दर ही अन्दर योगी बन करके अपने सहयोगी बने, अपने को सहयोग दो। योग से सहयोग मिलता है। योग से अन्दर बाबा का सहयोग बहुत है। बाबा ने इतना रॉयल बनाया है इसलिए कभी किसी से सहयोग लेना नहीं पड़ा है, जब जो ज़रूरत हो वो आपेही बाबा किसी न किसी के श्रु सहयोग देता है।

एक बारी बाबा ने टेस्ट लिया, कराची में बहुत अच्छा 56 प्रकार का भोजन बनवाया, सभी खाने के लिए बैठे थे, बाबा सबको देख रहा था, इतना अच्छा भोजन बना था सबने अच्छी तरह से खाया। रात को क्लास में पूछा कौन-सी चीज अच्छी थी? तो किसी ने कहा बाबा यह अच्छा था, तो बाबा ने कहा फेल। दूसरे दिन डायरेक्शन दिया अभी सिर्फ बात है शरीर को कुछ होता है, सकाश चला रही है। सूक्ष्म ईश्वर स्वयं मेरे ऊपर राजी हो करके सकाश की शक्ति दे रहा है। राजी नहीं होगा तो सकाश नहीं देगा, कहेगा तुम्हारे कर्म तुम जानो क्योंकि पुरुषार्थ में अटेन्शन नहीं है, बाबा को राजी नहीं कर सकेंगे। ब्राह्मणों को सबसे बड़ा दुःख है अपमान का। इच्छा है मान की,